छोटी लाल मुर्गी

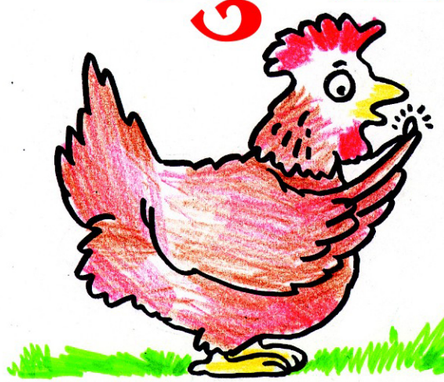

पुरानी बात है। एक छोटी लाल मुर्गी थी। वो एक खेत में रहती थी। अपना अनाज वो खुद ही उगाती थी। एक दिन लाल मुर्गी को गेहूँ का एक दाना मिला। उसने सोचा, चलो, मैं इसे बो दूँ। इससे मुझे खाने को कुछ अनाज मिल जाएगा।

"इस गेहूँ को बोने में कौन मेरी मदद करेगा?" लाल मुर्गी ने पूछा।

"मैं नहीं," बत्तख ने कहा, "पर मैं तुम्हें कॉफी के कुछ पौधे बेच सकती हूँ। अगर तुम गेहूँ की बजाय कॉफी

उगाओगी तो तुम्हें कहीं ज़्यादा आमदनी होगी।"

"मैं नहीं," सुअर ने कहा, "पर जब कॉफी की फसल तैयार होगी तो मैं उसे ज़रूर खरीद लूँगा।"

"मैं नहीं," चूहे ने कहा, "तुम्हें कॉफी की फसल बोने के लिए पैसा चाहिए होगा। वो मैं तुम्हें उधार दे सकता हूँ।"

छोटी लाल मुर्गी ने यह सब सुनकर तय किया कि वो अपने खेत में गेहूँ की बजाय कॉफी बोएगी।

"कॉफी बोने में कौन मेरी मदद करेगा?" छोटी लाल मुर्गी ने पूछा।

"मैं नहीं," बत्तख ने कहा, "पर मैं अच्छी कॉफी उगाने के लिए तुम्हें खाद बेच सकती हूँ।"

"मैं नहीं," सुअर ने कहा, "पर मैं फसल को कीड़ों से बचाने के लिए तुम्हें कीटनाशक बेच सकता हूँ।"

"मैं नहीं," चूहे ने कहा, "पर मैं तुम्हें खाद और कीटनाशक खरीदने के लिए कर्ज़ दे सकता हूँ।"

छोटी लाल मुर्गी ने बहुत मेहनत-मशक्कत की। खेत में खाद डाली और कॉफी के पौधे पर कीटनाशक छिड़का। इसमें बहुत खर्चा हुआ। गेहूँ उगाने में तो इससे बहुत कम पैसे लगते। पर अब वो उम्मीद लगाए रही कि कॉफी की फसल उसे बहुत मुनाफा देगी।

तब तक कॉफी की फसल पक कर तैयार हो गई।

"कॉफी बेचने में कौन मेरी मदद करेगा?" लाल मुर्गी ने पूछा।

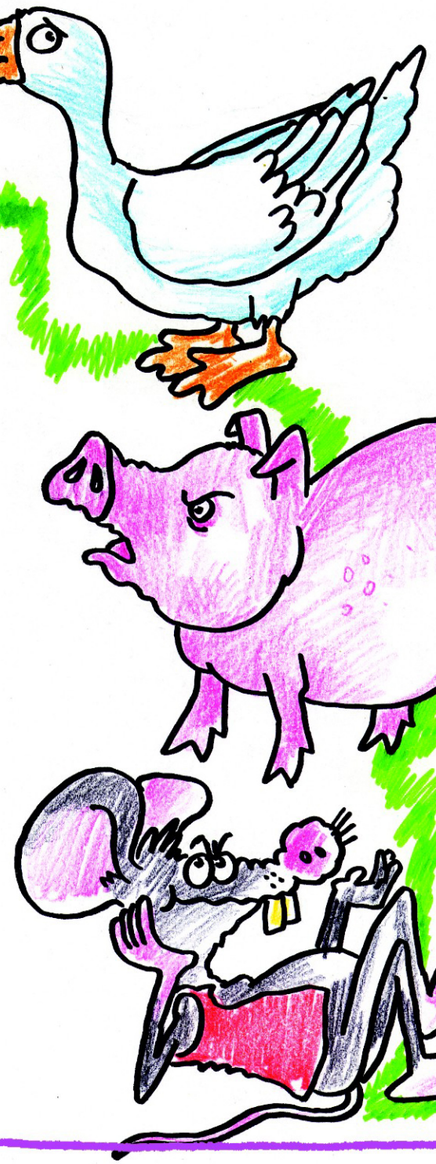

"मैं नहीं," बत्तख ने कहा, "पर कॉफी को भूनने और उसे पैकिट-बन्द करने में तुम्हें मेरी फैक्ट्री की ज़रूरत होगी।"

"मैं नहीं," सुअर ने कहा, "क्योंकि अब हर कोई कॉफी उगा रहा है इसलिए कॉफी के दाम एकदम गिर गए हैं।"

"मैं नहीं," चूहे ने कहा, "पर अब तुम्हें मेरा पूरा कर्ज़ चुकाना होगा।"

अब छोटी लाल मुर्गी को समझ आया कि उसने गेहूँ की बजाय कॉफी बोकर कितनी बड़ी गलती की थी। पर अब तक वो कर्ज़ में डूब चुकी थी और उसके पास खाने को एक दाना तक न था।

"खाना तलाशने में कौन मेरी मदद करेगा?" छोटी लाल मुर्गी ने पूछा।

"मैं नहीं," बत्तख ने कहा, "तुम्हारे पास खाना खरीदने के लिए एक धेला तक नहीं है?"

"मैं नहीं," सुअर ने कहा, "जब से सब लोगों ने कॉफी उगाना शुरू किया है तब से अनाज की बहुत किल्लत हो गई है।"

"मैं नहीं," चूहे ने कहा, "पर तुम्हारे ऊपर जो उधार है उसके बदले में मैं तुम्हारा खेत ले लूँगा। मैं शायद तुम्हें खेत पर रहने की इजाज़त दे दूँ पर इसके बदले तुम्हें बस मेरे लिए ही काम करना होगा।"

अनुवादः अरविंद गुप्ता, साभारः यूनीसेफ

मेरा पन्ना

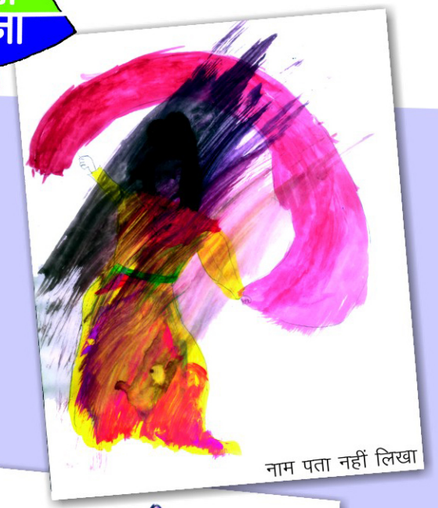

नाम पता नहीं लिखा

पी. अनन्या, दूसरी, ग्वालियर, म.प्र.

तनुश्री उपाध्याय, भोपाल, म.प्र